



## 36651 - कुर्बानी करने का समय

### प्रश्न

कुर्बानी करने का समय क्या है ?

### विस्तृत उत्तर

हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान केवल अल्लाह तआला के लिए योग्य है।

कुर्बानी के जानवर को ज़ब्ह (वध) करने का समय ईदुल अज्हा की नमाज़ के बाद आरंभ होता है, और जुल-हिज्जा के महीने के तेरहवें दिन सूर्यास्त तक रहता है। अर्थात् ज़ब्ह के दिन चार हैं : एक कुर्बानी का दिन और उसके बाद तीन दिन।

अफज़ल (सर्वश्रेष्ठ) यही है कि ईद की नमाज़ के बाद ज़ब्ह करने में जल्दी की जाए, जैसा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम करते थे। फिर ईद के दिन सबसे पहले अपनी कुर्बानी के गोश्त से खाना चाहिए।

इमाम अहमद (हदीस संख्या : 22475) ने बुरैदा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है, वह कहते हैं कि : (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ईदुल-फित्र के दिन सुबह कुछ खाकर जाते थे। और ईदुल अज्हा के दिन वापस आकर अपनी कुर्बानी (के गोश्त) से खाते थे।

ज़ैलई ने “नसबुर्रायह” (2/221) में इब्नुल-क़त्तान से वर्णन किया है कि उन्होंने ने इस हदीस को सहीह कहा है।

इब्नुल कैयिम रहिमहुल्लाह “ज़ादुल मआद” (2/319) में कहते हैं :

“अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं : कुर्बानी करने के दिन यह हैं : यौमुन्नहर (दस जुल-हिज्जा) और उसके बाद तीन दिन। बसरा वालों के इमाम हसन, मक्का वालों के इमाम अता बिन अबी रिबाह, शाम वालों के इमाम अवज़ाई और फुकहाउल हदीस के इमाम शाफेई रहिमहुमुल्लाह का मत यही है। और इसी को इब्ने मुन्ज़र ने भी अपनाया है। और इसलिए कि इन तीनों दिनों की यह विशेषता है कि वे सब मिना के दिन, कंकड़ी मारने के दिन और तशरीक के दिन हैं, तथा इन दिनों का रोज़ा रखना हराम (निषिद्ध) है। तो इस तरह ये इन अहकाम (प्रावधानों) में भाई (यानी बराबर) हैं। तो फिर बिना किसी शरई नस (कुरआन या हदीस के स्पष्ट प्रमाण) और इज्माअ (विद्वानों की सर्वसहमति) के ज़ब्ह की वैधता में भिन्न कैसे हो सकते हैं। तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दो विभिन्न तरीकों से वर्णित है जो एक दूसरे को मज़बूत करते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : “मिना सब का सब ज़ब्ह का स्थान है और तशरीक के

सभी दिन ज़ब्ह के दिन हैं।" अंत हुआ।

इस हदीस को शैख अल्बानी ने अस-सिलसिला अस-सहीहा (हदीस संख्या : 2476) में सहीह करार दिया है।

शैख इब्ने उसैमीन रहिमहुल्लाह "अहकामुलउज्जिया" में कुर्बानी के समय के संबंध में फरमाते हैं:

"कुर्बानी का समय कुर्बानी के दिन ईद की नामाज़ के बाद से तश्रीक के अंतिम दिन अर्थात् तेरहवीं जुलहिज्जा के दिन सूर्यास्त तक है। इस तरह ज़ब्ह (बलि) के दिन चार हैं : नमाज़ के बाद से ईद का दिन, और उसके बाद अतिरिक्त तीन दिन। अतः जिसने ईद की नमाज़ से फारिग होने से पहले, या तेरहवीं जुलहिज्जा को सूरज डूबने के बाद कुर्बानी किया तो उस की कुर्बानी सही (मान्य) नहीं है। . . . किन्तु यदि किसी कारणवश तश्रीक के दिन (13 जुल-हिज्जा) से विलंब हो जाए, उदाहरण के तौर पर बिना उसकी कोताही के कुर्बानी का जानवर भाग जाए, फिर वह समय निकल जाने के बाद ही मिले, या वह किसी को कुर्बानी करने के लिए प्रतिनिधि (वकील) बना दे और वकील भूल जाए यहाँ तक कि कुर्बानी का समय निकल जाए, तो उज्र के पाए जाने के कारण तथा उस आदमी पर क्रियास करते हुए जो नमाज़ से सो जाने या उसे भूल जाने की स्थिति में सोकर उठने या उसके याद आने पर नमाज़ पढ़ता है, समय निकलने के बाद कुर्बानी करने में कोई बात नहीं है।

तथा निर्धारित समय के अंदर दिन और रात में किसी भी समय कुर्बानी करना जायज़ है, जबकि दिन में कुर्बानी करना श्रेष्ठ है, और ईद के दिन दोनों खुत्वों के बाद कुर्बानी करना अफज़ल है। तथा हर दिन उसके बाद वाले दिन से श्रेष्ठ है, क्योंकि इसमें भलाई की तरफ पहल और जल्दी करना पाया जाता है।" संक्षेप के साथ अंत हुआ।

"फतावा स्थायी समिति" (11/406) में आया है कि :

"उलमा (विद्वानों) के सबसे सही कथन के अनुसार हज्जे तमत्तो, हज्जे किरान की हदी के जानवर और कुर्बानी के जानवर को ज़ब्ह करने के दिन चार हैं : एक ईद का दिन और तीन दिन उसके बाद, और ज़ब्ह करने का समय चौथे दिन सूर्यास्त पर समाप्त होता है।" संपन्न हुआ।